प्रातःक्लास 11.4.68 ओमशान्ति "शिवबाबा याद है?"

ओमशान्ति। बच्चे बैठे हैं याद की यात्रा में। बेहद का बाप तो यात्रा में नहीं बैठते हैं। वह तो बच्चों को सकाश की मदद दे रहे हैं अर्थात् शरीर को भुला रहे हैं। बाप की यह मदद मिलती है कि शरीर भूल जावें। अपनी सकाश देते हैं आत्माओं को; क्योंकि बाप देखते ही आत्माओं तरफ है। तुम हरेक की बुद्धि बाप के तरफ जाती है। बाप की बुद्धि वा दृष्टि फिर बच्चों तरफ जाती है। .....(डेड सायलेन्स)..... यह अभ्यास करते हो डेड सायलेन्स का। शरीर को छोड़ अलग होने चाहते हो। आत्मा समझती है कि जितना याद करते रहेंगे उतना ही शरीर से निकलते जावेंगे। जैसे सर्प का मिसाल देते हैं। मिसाल जो देते हैं उसमें ज़रूर कुछ रहस्य होते हैं। तुम जानते हो हम शरीर को छोड़कर वापस चले जावेंगे और फिर आवेंगे। यह बातें और कोई नहीं जानते। कोई भी ऐसी गैरन्टी नहीं देते हैं कि इस याद से तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। ऐसी बातें कोई भी सुनाते नहीं हैं। तुम बच्चे जानते हो हमारी अभी वापस जर्नी है। आत्मा का बुद्धियोग उस तरफ है। अभी नाटक पूरा हुआ। अभी घर जाना है। बाप को ही याद करना है। वही पतित–पावन है। गंगा को, पानी को तो लिबरेटर और गाइड नहीं कहेंगे। एक बाप ही लिबरेटर और गाइड हो सकता है। यह भी बड़ी समझने और समझाने की बातें हैं। वह तो है ही भक्ति। उनसे कोई कल्याण नहीं हो सकता। बच्चे जानते हैं पानी तो नाम के लिए है। पानी कब पावन नहीं बना सकता। ऐसे भी नहीं भावना का भाड़ा मिल सकता है। भक्तिमार्ग में उनका महत्व रख दिया है। इन सभी बातों को कहा जाता है अंधश्रद्धा। ऐसी अंधश्रद्धा रखते–2 मनुष्यों को टाइटिल मिल जाते हैं अंधे के औलाद अंधे। भगवानुवाच है ना। अंधे और सज़े यह भी तुम जानते हो। सारी सृष्टि के आदि, मध्य, अंत को बाप ही जानते हैं। तुम बाप को भी जान गये हो और सृष्टि के आदि, मध्य, अंत के डेक्युरेशन को भी जान गये हो। एक–2 बात पर विचार–सागर–मंथन करना है। अपना आपे ही फैसला करना होता है। भक्ति और ज्ञान का कॉन्ट्रास्ट है। ज्ञान बिल्कुल ही न्यारी चीज़ है। यह नॉलेज नामी–ग्रामी है। राजयोग की पढ़ाई है ना। बच्चों को यह भी मालूम पड़ा है यह (देवताएं) सम्पूर्ण निर्विकारी थे। रचयिता बाप ही बैठ अपना परिचय देते हैं। वह है परम आत्मा। परम आत्मा को ही परमात्मा कहते हैं। अँग्रज़ी में सुप्रीम सोल कहा जाता है। सोल अर्थात् आत्मा। बाप की आत्मा कोई बड़ी नहीं होती है। बाप ही(की) आत्मा भी ऐसी ही है जैसे तुम बच्चों की है। ऐसे नही बच्चे छोटे बाप बड़ा है। नहीं। वह सुप्रीम नॉलेजफुल बाप बहुत ही प्यार से बच्चों को समझाते हैं। पार्ट बजाने वाली आत्मा है। ज़रूर शरीर धारण कर पार्ट बजावेंगी। आत्मा का रहने का स्थान शान्तिधाम है। बच्चे जानते हैं हम आत्माएं अण्डे ब्रह्म महतत्व में रहती हैं। जैसे हिन्दुस्तान के रहने वाले अपन को हिन्दु कह देते हैं वैसे ब्रह्माण्ड में रहने वाले भी फिर ब्रह्म को ईश्वर समझ लेते हैं। ड्रामा में गिरने का उपाय भी नूँधा हुआ है। जानते ही नहीं तो वापस जा नहीं सकते। भल कोई कितनी भी मेहनत करे। नाटक जब पूरा होता है तो सभी एक्टर्स आकर इकट्ठे होते हैं। क्रियेटर, डायरैक्टर मुख्य एक्टर्स सभी खड़(ड़े) हो जाते हैं। बच्चे जानते हैं अभी यह नाटक पूरा होता है। यह बातें कोई भी साधु–संत आदि जान नहीं सकते। आत्मा की नॉलेज कोई को है नहीं। परमात्मा बाप यहां एक ही बार आते हैं। और सभी को तो यहां पार्ट बजाना ही है। शंकराचार्य को देखो वृद्धि होती रहती है ना। आत्माएं सभी कहां से आईं? अगर कोई वापस जाता है फिर तो वह रसम पड़ जाये। एक आवे दूसरा जावे। फिर उसमें पुनर्जन्म कहा नहीं जाये। पुनर्जन्म तो शुरू से ही चलता है। पहले नम्बर में हैं यह ल. ना.। बाप ने समझाया है पुनर्जन्म लेते–2 पिछाड़ी में जब आ जाते है तो फिर पहले नम्बर में जाना पड़ता है। इसमें संशय की कोई बात हो नहीं सकती। आत्माओं का बाप खुद आकर समझाते हैं। क्या समझाते हैं– अपना भी परिचय देते हैं। आगे पता था क्या कि परमआत्मा क्या चीज़ है। सिर्फ़ शिव के मन्दिर में जाते थे। यहां तो ढेर के ढेर मन्दिर हैं। सतयुग में मन्दिर, पूजा आदि होती ही नहीं। वहां तुम पूज्य देवी–देवता बनते हो। फिर आधा कल्प बाद पुजारी बनते हो। तो उनको फिर देवी

देवता नहीं कहेंगे। फिर बाप आकर पूज्य बनाते हैं। और कोई देश में यह गायन नहीं है रामराज्य औ(र) रावणराज्य। अभी तुम समझ गये हो रामराज्य का डेक्युरेशन कितना है, रावण राज्य का डेक्युरेशन कितना है। यह सिद्ध करना चाहिए यह नाटक है। उनको समझना है ऊँच ते ऊँच बाप है, वह भी नॉलेजफुल है। हम उन द्वारा ऊँच ते ऊँच बनते हैं। ऊँच ते ऊँच पद मिलता है। बाप हमको पढ़ाते हैं। दैवीगुण भी धारण करनी है। बच्चे वर्णन करते हैं आप ऐसे हैं, हम ऐसे हैं। इस समय तुम जानते हो हमको इन जैसा सम्पूर्ण निर्विकारी बनना है। बाप को याद करने सिवाय और कोई उपाय नहीं। अगर कोई जानता हो तो बतावे। ऐसे थोड़े ही कहेंगे ब्रह्म वा तत्व निर्विकारी है। नहीं। आत्मा ही निर्विकारी बनती है। ब्रह्म वा तत्व को आत्मा नहीं कहा जाता। वह तो रहने का स्थान है। बच्चों को समझाया जाता है आत्मा में ही बुद्धि है। वह जब तमोप्रधान बन जाती है तो बेसमझ बन जाती है। समझदार और बेसमझ है ना। तुम्हारी बुद्धि कितनी स्वच्छ बनती है और फिर मलेच्छ होती है। अभी तुम बच्चों को पवित्रता और अपवित्रता का कॉन्ट्रास्ट का भी मालूम पड़ा है। अपवित्र आत्मा तो वापस जा नहीं सकती। अभी पवित्र कैसे बने इसके लिए रड़ी मारते रहते हैं। यह भी ड्रामा में नूँध है। अभी तुम जानते हो यह है संगमयुग। बाप एक ही बार आते हैं ले जाने लिए। सभी तो नई दुनियां में नही जाते हैं। जिनका पार्ट ही नहीं। वह शान्तिधाम में रहते हैं ; इसलिए चित्र भी यह दिखाया है। बाकी और जो चित्र आदि हैं वह सभी भक्तिमार्ग के हैं। यह हैं ज्ञानमार्ग के। जिससे समझाया जाता है सृष्टि का चक्र फिरता है। 84 की सीढ़ी तो बुद्धि में बैठ गई है ना। कैसे नीचे उतरते–2 14 कला, 12 कला बने हैं। अभी फिर कोई कला न रही है। नम्बरवार तो हैं ना। एक्टर्स भी नम्बरवार आते हैं। कोई का वेतन हज़ार रुपया तो कोई का 1500, कोई का 100–150। कितना फ़र्क हो जाता है। पढ़ाई में भी कितना रात–दिन का फ़र्क है। उस स्कूल में तो कोई नापास होता है तो फिर से पढ़ना पड़ता है। यहां तो फिर पढ़ने की बात ही नहीं। पद कम हो जाता है। फिर कब पढ़ाई होगी ही नहीं। एक बार ही पढ़ाई होता(ती) है। बाप भी एक बार आते हैं। बच्चे जानते हैं पहले–2 एक ही राजधानी थी। यह तुम किसको भी समझावेंगे तो मानेंगे। क्रिश्चियन की बुद्धि पत्थर बुद्धि नहीं है जितनी यहां वालों की है। वह सुख भी कम तो दुःख भी कम पाते हैं। वह इन बातों को झट समझ सकेंगे। वह लोग तो साइंस में भी बड़े तीखे हैं। और सभी इन्हों से ही सीखते हैं। उन्ह(ों) की न पारस बुद्धि, न पत्थर बुद्धि होती है। इस समय उन्हों की बुद्धि कमाल कर रही है। साइंस का प्रचार सारा इन क्रिश्चियन से ही निकला है। वह भी सुख के लिए ही है। तुम जानते हो इस पुरानी दुनियां का विनाश तो होना ही है। फिर तुम सुखधाम–शान्तिधाम में चले जावेंगे। नहीं तो इतने सभी मनुष्य आत्माएं वापस कैसे जावें? साइंस से विनाश हो जावेगा। सभी आत्माएं शरीर छोड़ कर घर चली जावेंगी। इस विनाश में मुक्ति ..... इमर्ज है। आधा कल्प मुक्ति के लिए मेहनत करते आये हैं। तो साइंस और कैलेमिटीज़ जिसको खुदाई आपदाएं कहते हैं यह भी होनी चाहिए। समझाना चाहिए (यह) लड़ाई निमित्त बनते हैं। मुक्तिधाम ले जाने लिए। भक्तिमार्ग में भी यज्ञ, तप, दान, पुण्य आदि करते थे। भगवान पास अर्था(त) मुक्तिधाम जाने लिए। इस समय भी यह लड़ाई निमित्त बनी है। इतने सभी को मुक्तिधाम जाना है। तुमने कितनी भी मेहनत की , गुरू किये हठयोग सीखे कोई भी मुक्तिधाम जा न सके। इतने साइंस के गोले आदि तैयार होते हैं समझना चाहिए विनाश ज़रूर होगा। नई दुनियां में तो ज़रूर बहुत थोड़े ही होंगे। बाकी सभी मुक्तिधाम चले जावेंगे। जीवनमुक्ति में तो पढ़ाई की ताकत से आते हैं। तुम अटल अखण्ड, अडोल राज्य करते हो। यहां तो देखो सभी खण्ड के टुकड़े–2 हो गये हैं। बाप तुमको अटल, अखण्ड सारे विश्व की राजधानी का मालिक बनाते हैं अथवा वर्सा देते हैं। बेहद के बाप से बेहद की बादशाही, बेहद का वर्सा। यह वर्सा कब, किसने दिया यह कोई की बुद्धि में कब नहीं बैठता। सिर्फ़ तुम ही जानते हो। ज्ञान का तीसरा नेत्र आत्मा को ही मिला है।

आत्मा ज्ञान स्वरूप ज्ञान का सागर है। ज्ञान का सागर बाप .... ही बनना पड़े। बाप ही आकर रचयिता और रचना के आदि, मध्य, अंत का नॉलेज देते हैं। यह भी सेकण्ड की बात। सेकण्ड में जीवनमुक्ति। बाकी सभी को मुक्ति मिलती है। सभी तो जीवनमुक्ति में आ न सके। यह भी ड्रामा बना हुआ है। रावण के बन्धन से सभी मुक्त हो जाते हैं। वह लोग तो विश्व में शान्ति के लिए कितनी मेहनत करते हैं। यह सिर्फ़ तुम बच्चे ही जानते हो कि विश्व के और ब्रह्माण्ड में शान्ति कब होती है। ब्रह्माण्ड में शान्ति कहा जाता है फिर विश्व में सुख और शान्ति दोनों ही रहती है। विश्व अलग है, ब्रह्माण्ड अलग है। चांद, सितारों से परे ब्रह्माण्ड। वहां यह कुछ भी रहती नहीं, उनको कहा जाता है साइंस वर्ल्ड। शरीर छोड़कर साइंस में चले जावेंगे। तुम बच्चों को वह भी याद है। तुम इस समय वहां जाने की तैयारी कर रहे हो। और कोई जानते ही नहीं। तुमको तैयारी कराई जाती है। बाकी भी लड़ाई तो निमित्त है। सभी का हिसाब–किताब चुक्तू होना है। सभी पवित्र बन जावेंगे। योग अग्नि है ना। अग्नि से तो हर चीज़ पवित्र होती हैं। जैसे बाप ड्रामा के आदि, मध्य, अंत को जानते हैं वैसे तुम एक्टर्स को भी ड्रामा के आदि, मध्य, अंत को भी जानना है। जानने को ही सा. कहा जाता है। अभी तुम्हारा ज्ञान का तीसरा नेत्र खुला है। बरोबर हम सारे विश्व को सतयुग से लेकर कलयुग अंत तक पूरा जान चुके हैं। दूसरा कोई भी मनुष्य नहीं जानते। तुम समझते हो जो गुणों वाले थे वही फिर आसुरी गुणों वाला बनते हैं फिर बाप आकर दैवी गुणों वाला बनाते हैं। बाप आते ही पतितों को पावन बनाने। पूरा पतित और पूरा पावन। दुनियां में और कोई को यह पता नहीं है कि यह देवताएं घराणे वाले ही पूरे 84 जन्म लेने वाले हैं। पतित भी, तो पावन भी बनते हैं। यह और किसकी बुद्धि में नहीं है। तुम अभी समझते हो यह तो जड़ चित्र है। एक्युरेट फोटो उन्हों का तो निकल न सके। वह तो नैचुरल चैतन्य गोरे हैं। पवित्र प्रकृति से शरीर भी पवित्र बनते हैं। यहां तो अपवित्र हैं। यह रंग–बिरंगी दुनियां सतयुग में नहीं होगी। कृष्ण को कहा जाता है श्याम–सुन्दर। सतयुग में है सुन्दर। कलयुग में श्याम। सतयुग से कलयुग में कैसे आते हैं, तुमको नम्बरवन से लेकर मालूम पड़ा है। कृष्ण तो गर्भ से निकला और नाम मिला। नाम तो ज़रूर चाहिए ना। तो कहेंगे कृष्ण की आत्मा सुन्दर थी फिर श्याम बनी; इसलिए श्याम–सुन्दर कहा जाता है। उनकी जन्मपत्री मिल गई तो सारी चक्र की मिल गई। कितना रहस्य भरा हुआ है। जिसको तुम ही समझते हो। और कोई नहीं जानते। तुमको अभी नई दुनियां ,नये घर में जाना होता है। जो अच्छी रीत पढ़ते हैं, पढ़ाते हैं वे ही नई दुनियां में जावेंगे। यह (ल.ना.) बिल्कुल नई दुनियां के मालिक हैं ना। दुनियां के कोई के भी बुद्धि में यह बातें नहीं है; क्योंकि लाखों वर्ष कह दिया है। और फिर परमात्मा को ठिक्कर–भित्तर में डाल दिया है। ठिक्कर–भित्तर में कब आत्मा हो सकती है क्या? कितनी मूर्खता है। उनकी फिर एक नाटक भी दिखाते हैं कण–2 में भगवान। इसको ही ग्लानी कहा जाता है। पत्थर बुद्धि बनने से उनको भी पत्थर बना दिया है; इसलिए बाप कहते हैं यदा यदा ही धर्मस्य..... मनुष्य कितना घोर अंधियारे में हैं। भक्ति को कहा ही जाता है अज्ञान। ज्ञान का सागर तो एक ही बाप है। बाकी है भक्ति। फिर भक्ति वाली दुनियां का वैराग्य। बाप ज्ञान देते हैं जिससे हम आधा कल्प सुखी रहते हैं। फिर भक्ति में धक्का खाना होता है। वहां तो यह शास्त्र आदि होते ही नहीं। भक्ति पूरी होने बाद ही वैराग्य। सन्यासियों को फिर भक्ति के बीच में ही वैराग्य हो जाता है। घर–बार छोड़ फिर भी इसी दुनियां में ही रहते हैं। तुम बेहद का सन्यास करते हो। वह है हद का सन्यास। तुम्हारा है बेहद का। बाबा है बेहद के सारी दुनियां का मालिक। सभी आत्माओं का बाप। बाप को मालिक कहा जाता है। फर्रूखाबाद तरफ मालिक को मानते हैं। घर का मालिक तो बाप ही होता है। बच्चों को बच्चे ही कहेंगे। जब वह भी बड़े होते हैं। बच्चे पैदा करते हैं तब फिर मालिक बनते हैं। यह सभी राज़ समझने की है। यह पढ़ाई है। इसमें कोई संशय वा प्रश्न नहीं उठ सकता। इसमें शास्त्रवाद करने की भी दरकार नहीं। एक ही टीचर सबसे ऊँचा हैं वह बैठ कर

पढ़ाते हैं। वह ही सत्य है। सत्य नारायण की सच्ची शिक्षा देते हैं। जो फिर कथा के रूप में चलती है। उन भक्तिमार्ग के कथाओं में मनुष्यों को भाव कितना रहता है। अभी तो उन कथाओं आदि की भी इतना प्रभाव आदि न रहा है। नहीं तो बहुत वर्त(व्रत) नेम आदि रखते थे। सत्य ना. अर्थात् नर से नारायण बनने की यह नॉलेज है। जिसका फिर भक्तिमार्ग में महत्व चलता है। पवित्र आत्मा और पुण्यात्मा कहा जाता है। यह है पवित्र आत्माएं। पुण्यात्मा क्यों कहते हैं? क्योंकि बाप को तन–मन–धन से सभी स्वाहा करते हैं। तो पुण्यात्मा कहा जाता है। अपवित्र आत्मा से पवित्र आत्मा बनेंगे योगबल से। इसमें दान–पुण्य आदि की बात ही नहीं। यह योग की बात है। भारत का योग मशहूर है। सारे विश्व को बाप हेवेन बनाते हैं; इसलिए उनको याद भी करते रहते हैं कि आकर हमको गाइड करो। आगे मूज़ बनाते थे। फिर जब उसमें मनुष्य मूँझ जाते हैं तो चिल्लाते हैं। इनसे हमको निकालो। मन्दिरों में भी कितना चिल्लाते हैं; क्योंकि सभी मूँझे हुये हैं। सुखधाम–शान्तिधाम का गेट मिलता ही नहीं है तो चिल्लाते रहते हैं। तो कितने मेले मलाखड़े लगते हैं। इसको तो कहा जाता है संगमुयग । कुम्भ का मेला आदि वह सभी हैं भक्तिमार्ग की बातें। यह है आत्माओं और परमात्मा का मेला। उन मेलों में तो मैले बन पड़ते हैं। बाप तो बच्चों (को) आकर बिल्कुल स्वच्छ बनाते हैं। एक श्याम–सुन्दर थोड़े ही होगा। श्याम–सुन्दर का अर्थ ही देखो कैसा है। पुरानी दुनियां को लात मारते हैं और नई दुनियां हाथ में है। अभी तुम्हारा सिर है स्वर्ग तरफ, लात है नर्क तरफ। हम अभी शिवालय में आते हैं। टांगे वैश्यालय तरफ है। हम शिवालय में जाते हैं वाया शान्तिधाम। सिर इस तरफ है। चित्र करके एक का दिखाया है। यह तो बहुत सहज समझने की बातें हैं। मनुष्य कहेंगे... यह फिर क्या है तुम तो इनका अर्थ जानते हो ना। जो बनाते हैं वही जानते हैं। भक्तिमार्ग में चित्र बनाने वालों से अर्थ पूछो तो कुछ भी .... बतावेंगे। तुम तो सभी समझते हो। इसको कहा जाता है ईश्वरीय पढ़ाई। निराकार ईश्वर पढ़ावेंगे कैसे? इसलिए कृष्ण का नाम डाल दिया है। तुम बच्चे सिर्फ़ यह याद करो तो अभी सिर हमारा स्वर्ग तरफ, पैर नर्क तरफ है। तो भी मनमनाभव हो जाये। यह है रथ। और वह है बाप। यह ज्ञान तुमको बाप देते हैं, न कि रथ। इन रथ का कोई गुरू नहीं है जिसने इनको सिखाया। नहीं तो गुरू होता तो फिर अनेक सीख पड़ते। ऐसे नहीं कि इनको यह ज्ञान किस गुरू से मिला है। नहीं। यह ज्ञान देते ही बाप हैं। यह तो सिर्फ़ रथ है। अच्छा, मीठे–2 बच्चों को बाप दादा का याद प्यार गुडमॉर्निंग और नमस्ते।

पिकनिक 10.4.68 बुधवार

बच्चे यह तो जानते हैं हमारा बाप, टीचर, गुरू एक ही है। सद्गुरू कहते हैं मामेकं याद करो। दुनियां में गुरू तो अनेक हैं; क्योंकि स्त्री के लिए पति गुरू ईश्वर कहलाते हैं। अ(ह)थियाला बांधते हैं तो कहते हैं ना पति ही तुम्हारा ईश्वर, गुरू है। गुरू तो लाखों हैं। सद्गुरू एक ही है। कहते हैं सद्गुरू अकाल.....जिसको कोई काल नहीं खा सकता। तुमको वहां काल नहीं खाते हैं। तो जब तुम पिकनिक करते हो किसके .... जो ऊँच ते ऊँच बाप भी है और शिक्षक भी है। सृष्टि के आदि, मध्य, अंत का राज़ भी बतलाते। फिर सुखधाम–शान्तिधाम साथ में ले जाने वाला भी है। तो ऐसे बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप जन्म–जन्मांतर के कट जावेंगे। पाप कोई एक जन्म का तो नहीं है ना। जन्म जन्मांतर का पाप सिर पर है। यह बाप तो गैरन्टी करते हैं तुम्हारे जन्म–जन्मांतर के पाप कट जावेंगे अगर श्रीमत पर चलेंगे तो और तुम सुखधाम–शान्तिधाम के भी मालिक बन जावेंगे। वो बाप ही सुखधाम–शान्तिधाम के गेट ख(ो)लते हैं। बाप ही स्वर्ग के उद्घाटन करते हैं। तो तुम बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए। हम श्रीमत से ही श्रेष्ठ .... बनते हैं। अभी तुम ईश्वरीय दरबार में पिकनिक रहे हो। अभी तुम अपन को आत्मा समझ ईश्वर के दरबार में बैठे हो। तो तुम्हारी कितनी लांग लाइफ बनती है। बच्चे भी बाप को याद कर विकर्मों पर जीत पाते हैं ..... विकर्माजीत राजा बनते हैं। सतयुग में है विकर्माजीत डिनायस्टी। फिर होते हैं विकर्मीं सम्वत। ओम ।